तबाही की ओर जाता पर्यावरण

विश्व में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भयावह रूप धारण कर रही है। एक शोध संस्थान वर्ल्ड वाच के अनुसार संसार की 25% जनसंख्या को पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है, संसार की 50% जनसंख्या को स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं व 80% देश पानी की गंभीर कमी की समस्या से ग्रसित हैं। देश के 60,000 गांवों में पीने के पानी का कोई स्रोत उपलब्ध नहीं है। देश में प्रदूषित पानी से प्रतिवर्ष 13 लाख बच्चे अपनी जान गंवा बैठते हैं व विश्व में प्रति वर्ष प्रदूषित पानी पीने से 4 करोड़ 50 लाख लोग प्रभावित होते हैं। संसार में 24% स्तनधारी, 12% पक्षी, 25% रेंगने वाले जीव और 30% मछलियों की प्रजातियां खतरे में हैं। भारत देश की 10% से अधिक जीवों व वनस्पतियों की प्रजातियां खतरे में हैं।

विश्व स्तर पर वर्ष 1990 में वन विनाश 94 मिलियन हैक्टेयर था। वर्तमान में उष्ण कटिबन्धीय वन प्रति सैकेण्ड एक हैक्टेयर की दर से साफ किए जा रहे हैं। भारत में एक शताब्दी पहले जहां वनों से आच्छादित क्षेत्रफल 40% था, वह घटकर वर्ष 1951 में 22% व 1997 में 19% हो गया था। प्रति वर्ष विश्व में 6 मिलियन हैक्टर कृषि भूमि नष्ट हो जाती है व इससे 250 मिलियन लोग प्रभावित होते हैं। संसार के 1 बिलियन लोग प्रदूषित हवा में सांस लेते हैं व 3 मिलियन लोग प्रति वर्ष वायु प्रदूषण से मरते हैं। संसार के 50% तटीय वन समाप्त हो चुके हैं जिससे तटीय परिस्थितिकीय संतुलन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। पिछले 40 वर्षों में भारत ने भी अपने 50% तटवर्ती वनों को खो दिया है। तटवर्ती वनों के नष्ट होने से ही 1999 के भीषण चक्रवात ने उड़ीसा के तटवर्ती प्रदेश में जन-धन की भारी तबाही की थी। बाढ़, सूखा, चक्रवात, सुनामी व भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं से 1980 में 147 मिलियन व्यक्ति मरे जबकि 1990 में इन प्राकृतिक आपदाओं से मरने वालों संख्या 211 मिलियन थी। भारत में ही जहां प्राकृतिक आपदाएं आमतौर पर आती रहती हैं यहां 1999 में चक्रवात से उड़ीसा में दस हजार आदमी मरे, सन् 2001 में गुजरात में आए भूकम्प में 16,000 आदमी मरे व सन् 2004 की सुनामी लहरों से भारत में 30,000 व्यक्ति मारे गए।

बढ़ते प्रदूषण की वह से वैश्विक तापन के स्पष्ट प्रभाव नजर आने लगे हैं। सितम्बर 2003 से नवम्बर 2003 का समय अब तक का सबसे गर्म समय था। ध्रुवीय एवं अन्य उच्च क्षेत्रों में स्थित ग्लेशियर पिघलने लगे हैं। जिससे समुद्र से स्तर में वृद्धि हुई व कई तटवर्ती देशों एवं द्वीपों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। मई 2002 में आंध्रप्रदेश में गर्मियों का तापमान 490 सैल्सियस तक बढ़ गया जिससे बहुत से व्यक्ति गर्मी से मारे गए। हिमालय क्षेत्र में वैश्विक तापमान की वजह से ग्लेशियर 15 मीटर प्रतिवर्ष की दर से पीछे सरक रहे हैं जो एक चिंता का विषय है। वर्ष 2004 में फ्रांस व पुर्तगाल में गर्म लू से मरने वालों की संख्या काफी थी।

संसार में नगरीकरण तेजी से बढ़ रहा है जिससे अनेक पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। वर्तमान में विश्व की 50% जनसंख्या नगरों में निवास करती है जबकि 1972 में 33% जनसंख्या नगरों में रहती थी। नगरों की 25% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करती है। भारत की 23% महानगरों की जनसंख्या गंदी बस्तियों में निवास करती है। मुम्बई की धारावी गंदी बस्ती एशिया की सबसे बड़ी गंदी बस्ती है जिसमें 170 हैक्टेयर क्षेत्र में 5 लाख लोग निवास करते हैं।

संसार में बढ़ती जनसंख्या भी पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दे रही है। वर्ष 1650 में विश्व जनसंख्या 50 करोड़ थी जो कई हजार सालों में बढ़कर हुई थी जबकि वर्ष 1850 में यानी 200 सालों के अंतर में जनसंख्या बढ़कर दुगुनी यानी 100 करोड़ हो गई व 2001 में 613 करोड़ हो गई। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि ने संसाधनों पर भारी दबाव डालकर पर्यावरणीय संकट की स्थिति उत्पन्न की है।

पानी, पेड़ और शुद्ध हवा। जीवन की अनमोल दवा।।

- **वीरा जुनेजा**
प्रिंसीपल, डॉ. शांति यादव स्कूल ऑफ नर्सिंग, मीरपुर, हरियाणा